12

परमेश्वर और चुगली (4:11, 12)

गत वर्ष से हम ने मीडिया में जिम बक्कर और पीटीएल क्लब के गिरने को देखा है। इसकी खबरें नेटवर्क न्यूज़ कार्यक्रमों, साप्ताहिक समाचार पत्रिकाओं और यहां तक कि पंसारी की दुकान में भी हर जगह सुनने को मिलीं। हमने वकीलों से कानूनी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा सुनी और हास्य कलाकारों को (हंसाने वाले हों या न) जोक बताते सुना।

ऐसी विद्रोही परिस्थिति पर बातें करने का क्या कारण है, जो परमेश्वर की सेवा करने की कोशिश करने वालों की परेशानी का कारण है? हम जानते हैं कि संसार के साथ-साथ शैतान उस व्यक्ति के गिरने पर आनन्दित होता है, जिसे परमेश्वर का जन ''माना'' जाता है। इसीलिए प्रैस ने समाचारों में शोर मचा दिया कि पैट रॉबर्टसन की सबसे बड़ी संतान विवाह से पूर्व की है। संसार को इसी लिए इस ख़बर में आनन्द आया कि ओरल रॉबर्ट्स ने कहा था कि परमेश्वर ने उसे बन्धक बनाया हुआ था। इसीलिए ज़िमी स्वेगर्ट की शरारत मीडिया में बड़ी खबर बन गई। संसार केवल कहानी को ही नहीं जानना चाहता, बल्कि यह ऐसी घिनौनी छोटी-छोटी बातों को भी जानना चाहता है।

पर क्या ऐसी परिस्थितियों के बारे में केवल बात करना संसार ही पसन्द करता है? हम सब को अच्छा लगता है। मैंने तो यह टिप्पणी सुनी है कि प्रचारक सबसे बेकार चुगली करने वाले होते हैं, विशेषकर एक दूसरे के बारे में। दुख तो होता है पर मैं मान लेता हूं कि यह सही है। आमतौर पर हमें पता होता है कि किसे निशाना बनाया गया है और क्यों, किसने नैतिक या व्यावसायिक रूप में गलती की है, किसे कितना वेतन मिलता है आदि। आइए इसका सामना करें। आमतौर पर मसीही लोग अन्य मसीही लोगों की बातें करते हैं। यदि हम में से कोई भयंकर गलती कर ले, तो उसकी ख़बर जंगल की आग की तरह फैल जाती है। हम सभी उन लोगों के बारे में जानते हैं, जिन्होंने किसी कहानी के फैलने के कारण पूरी तरह से आराधना में आना बन्द कर दिया या किसी दूसरी मण्डली में चले गए। ऐसा क्यों है कि हमें एक दूसरे की बुराई जानने और उसकी बात करने में आनन्द आता है?

याकूब हमें अपने विश्वास के अनुसार जीवन बिताने की ओर लाने के अपने मिशन में हमारे सामने मांग रखता है कि हम एक-दूसरे की बदनामी न करें। फिर वह एक निर्णायक बात पर ध्यान दिलाता है कि अपने विश्वास के कारण मसीही व्यक्ति संसार के लोगों से अलग होना आवश्यक है। याकूब न केवल गप्पें मारने वाले न होने की आज्ञा देता है, बल्कि वह इसके चार कारण भी बताता है कि चुगली करने वाले क्यों नहीं होना चाहिए।

नियम (4:11)

याकूब सरल और स्पष्ट ढंग से वर्णन करता है: ''हे भाइयो, एक-दूसरे की बदनामी न करो'' (याकूब 4:11क)। इस स्पष्ट आज्ञा के अनुसार, दूसरे के प्रति मसीही व्यक्ति की बातचीत

अच्छी चलती है। मूल भाषा में यह संकेत मिलता है कि बदनामी अपने लिए जगह बना रही थी और भाइयों को इसे रोकना था। इस आसान सी आज्ञा की थोड़ी व्याख्या होनी आवश्यक है।

दूसरों की बातें करने वालों के विषय में परमेश्वर ने कभी अच्छा विचार नहीं रखा (नीतिवचन 20:19; 26:20; रोमियों 1:29, 30; 1 कुरिन्थियों 6:10)। तो फिर ऐसा क्यों है कि हम परमेश्वर की नज़र में किसी बात में अपने आपको इतना घिनौना बना देते हैं? शायद गप्पें मारने वाले होने के हमारे व्यवहार को विल रोजर्स ने बेहतर ढंग से संक्षिप्त किया, जब उसने कहा, ''लोगों को चुगली करने वाले केवल तभी पसन्द नहीं होते जब आप उनके बारे में बातें करें।'' यह हो सकता है कि किसी दूसरे के बारे में कुछ गलत पता होने पर हमें अपने आप में अच्छा लगे। गप्पें मारने वाले होने का एक मात्र तर्कसंगत कारण केवल यही लगता है।

एक दूसरे की बदनामी न करने के कारणों में जाने से पहले, आइए एक और प्वायंट उठाते हैं। कई बार हमें अपनी बात सही होने पर लगता है कि किसी भाई की बात करना उचित है। *पर* याकूब यह नहीं कह रहा है! वह उस आज्ञा में किसी योग्यता की अनुमति नहीं देता। याकूब आत्मा की प्रेरणा से बोलते हुए, स्पष्ट कहता है कि हम एक दूसरे की बदनामी न करें।

आज्ञा का आधार (4:11, 12)

उनके लिए सम्मान

एक दूसरे की बदनामी न करने का पहला कारण है कि क्योंकि *हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए*। इस वचन पाठ के अन्दर ''भाईचारे'' पर ज़ोर स्पष्ट मिलता है। आयत 11 कहती है, ''*हे भाइयो,* एक दूसरे की बदनामी न करो, जो अपने *भाई* की बदनामी करता है; या *भाई* पर दोष लगाता है, ...।'' भाइयों का सम्बन्ध परिवार के सदस्यों की तरह एक दूसरे से प्रेम में जुड़े होना है (रोमियों 12:10; गलातियों 6:10)। पवित्रशास्त्र कहता है कि यदि हम अपने भाई के बारे में कुछ जानते हैं, तो किसी को भी बताने के बजाय हमें उसी को बताना चाहिए। सबसे तसल्ली देने वाली या आसान बात यही है, पर उस भाई के प्राण के लिए हमारा प्रेम और चिंता हमें विवश करता है। हर किसी से बात करने पर अपने भाई के पास न जाना उसके लिए बाइबल के अनुसार सम्मान दिखाना नहीं है।

व्यवस्था का सम्मान

अपने भाई के लिए मेरे सम्मान से न केवल उसके बारे में मुझे बोलने से रोकना चाहिए बल्कि व्यवस्था के लिए *मेरे* सम्मान से भी ऐसा ही होना चाहिए। यह पढ़कर कि ''जो अपने भाई की बदनामी करता है या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बदनामी करता है और व्यवस्था पर दोष लगाता है; और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलने वाला नहीं पर उस पर हाकिम ठहरा,'' हम जानना चाहते हैं कि यह ''किस व्यवस्था?'' की बात है। स्पष्टतया याकूब पुरानी व्यवस्था की बात नहीं कर रहा था। संदर्भ से यह ''राज व्यवस्था'' (2:8) और ''स्वतन्त्रता की व्यवस्था'' (2:12) की बात प्रतीत होती है। जो हम कर रहे हैं वह हमें उसके तात्पर्य दिखाना चाहता है। पहले तो हम उस व्यवस्था को तोड़ रहे हैं जो हमारे मानने

के लिए थी। फिर हम अपने आपको व्यवस्था के ऊपर बना रहे हैं। व्यवस्था कहती है, ''एक दूसरे से प्रेम करो,'' परन्तु अपने कामों से हम कहते हैं कि यह गलत है, यह इस प्रकार होना चाहिए, ''एक-दूसरे की आलोचना और बदनामी करो।'' एक अर्थ में हम कह रहे हैं कि हम मनुष्य को व्यवस्था दिए जाने के समय परमेश्वर के ज्ञान से अधिक जानते हैं।

परमेश्वर के लिए सम्मान

तीसरा हमें एक दूसरे की बदनामी इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि हम परमेश्वर का सम्मान करते हैं, ''व्यवस्था देने वाला और हाकिम तो एक ही है, जिसे बचाने और नाश करने की सामर्थ है'' (4:12)। वह कहता है कि व्यवस्था का देने वाला केवल परमेश्वर है और अपनी दी हुई व्यवस्था को बदलने या उसे नकारने का अधिकार उसी को है। हमारे कामों से व्यवस्था बदल नहीं जाती यानी हमारा यह सोचना कि हम परमेश्वर से, जिनसे व्यवस्था दी थी, बेहतर जानते हैं ढीठता होगी। परमेश्वर केवल अकेला व्यवस्था का देने वाला ही नहीं, बल्कि वह अकेला न्यायी भी है। केवल वही है, जिसमें न्याय करने की योग्यताएं हैं। वह सब तथ्यों को जानता है, वह पाप के हर दाग से बेदाग है और हमें जानता है क्योंकि उसने हमें बनाया है। बेशक हमारे यह सब बताने का उद्देश्य यह है कि जब हम अपने भाई की बदनामी करते हैं तो हम न्याय करने वाले बन जाते हैं। परमेश्वर केवल अकेला है, जो ऐसे निर्णय ले सकता है।

अपने लिए सम्मान

चौथा, अपना सम्मान करने के ढंग के कारण हमें अपने भाई की बदनामी नहीं करनी चाहिए। NIV का अनुवाद आयत 11 में कमज़ोर है परन्तु यहां पूरे बल के साथ यह चोट करता है। ''पर तुम-अपने पड़ोसी का न्याय करने वाले कौन होते हो?'' धड़म्म! आपकी आंखों के बीच में! अपनी सारी कमज़ोरियों, संघर्षों, समस्याओं और पापों के साथ अपने भाई की बदनामी करने वाला मैं कौन हूं? मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो कि यीशु नीचे मेरी ओर देखकर, मेरे काम करने के ढंग और किसी दूसरे की बदनामी करने के ढंग को देखे और कहे, ''कपटी!''

सारांश

हम ''चुगली करने वाले होने'' को सम्भवतया छोटे पाप के रूप में देखते हैं। हम कहते हैं, ''कुछ दूसरे पापों के मुकाबले यह कुछ भी नहीं है।'' वास्तव में संसार ने कला का नाम देकर इसका रुतबा बढ़ा दिया। इसमें गॉसिप कॉलम और यहां तक कि टीवी के गॉसिप शो ही चलते हैं। परन्तु क्या परमेश्वर इसे इस प्रकार से देखता है? विश्वासियों के पारिवारिक शब्द का उल्लंघन करते हैं तो हम पाप करते हैं। हम राज व्यवस्था को तोड़ते हैं। हम अपने आपको परमेश्वर की जगह रखकर अपने स्वयं के पापी होने को देख नहीं पाते। आइए एक-दूसरे की बदनामी न करने का निश्चय लें।